के क्षेत्र में हुए नए प्रयोगों के जरिए पशु उत्पादकता में सुधार लाना, पोषण एवं पशु स्वास्थ्य तथा दूध उत्पादकों को बाजार की पहुंच उपलब्ध कराना शामिल हैं।

गुजरात के माननीय मंत्रियों ने डेरी सहकारिताओं में प्रौद्योगिकी की भूमिका पर अपने बहुमूल्य विचार व्यक्त किए। उन्होंने डेरी सहकारिताओं को ग्रामीण क्षेत्रों में नए अवसरों का सृजन करने का सुझाव दिया।

अपने संबोधन में अध्यक्ष, एनडीडीबी ने डेरी किसानों को अतिरिक्त आय उपलब्ध कराने पर केंद्रित एनडीडीबी की नई प्रौद्योगिकी संचालित विभिन्न पहलों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि एनडीडीबी ने देशी गाय की नस्लों के जिनोमिक चयन के लिए इंडसचिप (INDUSCHIP) नामक एक जिनोटाइपिंग चिप विकसित किया है। इन-विट्रो भ्रूण उत्पादन तकनीक के माध्यम से देशी नस्लों का सुधार भी किया जा सकता है। खाद प्रबंधन को आय का एक अतिरिक्त स्रोत बनाने के लिए एनडीडीबी डेरी किसानों द्वारा फ्लेक्सी बायो गैस संयंत्रों के उपयोग को प्रोत्साहित कर रही है। सोलर पम्प इरिगेटर्स कोऑपरेटिव इंटरप्राइज अर्थात SPICE का निर्माण एनडीडीबी की अन्य महत्वपूर्ण पहल है जिसके जरिए सोलर पम्प अपनाने वाले किसान उत्पन्न अतिरिक्त बिजली की बिक्री कर सकेंगे। इसके अलावा, उन्होंने यह बताया कि ग्राम स्तरीय डेरी सहकारी समितियों द्वारा साइलेज का उत्पादन और व्यावसायिक तौर पर उनकी बिक्री अन्य पहल है जिसका सफलतापूर्वक प्रयोग किया जा चुका है। हरे चारे एवं फसल अवशेषों के भंडारण के लिए इस साइलेज प्रौद्योगिकी में अपार संभावनाएं उपलब्ध हैं। यदि इसे कम लागत वाले चॉपर्स, मोवर्स, बैगर, बेलर और रैपर्स का इस्तेमाल करके 25-50 किलो की बोरियों में पैक किया जाए तो गांव एवं मिल्क शेड में इसको आसानी से बेचा जा सकता है।

श्री रथ ने यह बताया कि एथनो वेटनरी मेडिसीन तकनीकों को लोकप्रिय बनाकर दूध उत्पादक पशु उपचार खर्च में काफी बचत कर सकते हैं जो कि किसानों की आय का एक अप्रत्यक्ष स्रोत बन सकता है। एनडीडीबी की स्वचालित दूध संकलन प्रणाली (एएमसीएस) सॉफ्टवेयर में सहकारी व्यवसाय को मजबूती प्रदान करने के लिए डिजिटल पहल का उपयोग किया गया है। इस एकीकृत सॉफ्टवेयर से डीसीएस स्तर पर संपूर्ण संचालनों में पारदर्शिता आती है और संचालन संबंधी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। एएमसीएस से किसानों के दूध बिल का भुगतान सीधे बैंक खातों में किया जाता है।